डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर–416012

* संस्तुति *

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. परशराम शंकर मोरे का " **अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्र** " लघु शोध–प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय ।

कोल्हापुर ।

दिनांक :– 31 दिसम्बर, 1997

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

प्रा. डॉ. पुष्पा वास्कर,
एम.ए.,एम.एड्.,पी.एच.डी.
आचार्य जावडेकर महाविद्यालय,
गारगोटी – 416 209 ।

प्रमाण–पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री.पी.एस. मोरे ने शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध मेरे निर्देशन में लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य संपन्न हुआ है । जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं,मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

स्थल –कोल्हापुर
दिनांक:31 दिसंबर,1997 ।

(प्रा. डॉ.पुष्पा वास्कर)
शोध –निर्देशका
आचार्य जावडेकर महाविद्यालय,
गारगोटी–416 209

प्रमाण पत्र(प्रख्यापन)

मैंने "अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्र " लघु शोध–प्रबंध प्रा.डॉ.पुष्पा जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल (हिंदी)उपाधि के लिए लिखा है । इस प्रबंध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

स्थल –कोल्हापुर

दिनांक – 31 दिसंबर,1997

श्री.पी.एस. मोरे,

शोध छात्र

अनुक्रमणिका

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन :

प्रथम अध्याय — उपेंद्रनाथ अश्क : एक दृष्टिक्षेप — 1–14

जीवन परिचय –

जन्म, माता–पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह, जीवन–संघर्ष,

सेहतमंद मरीज, देहांत ।

कृतित्व –

नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानीसंग्रह, काव्य–साहित्य,

संस्मरण, जीवनी और लेख, अनुवाद ; संपादन–संकलन,

आलोचना ।

व्यक्तित्व ।

निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय — **रंगमंच पर न आने वाले पात्र:स्वरूप, महत्व एवं आवश्यकता ।** — 15 – 31

स्वरूप –

दृश्य–श्रव्य कथावस्तु

सूच्य कथावस्तु –विष्कंभक, प्रवेशक, चूलिका, अंकमुख या

अंकास्य, अंकावतार ।

महत्त्व एवं आवश्यकता –

कथावस्तु के विकास में सुलभता , नायक के विकास और

उद्देश्य में सहायक, मनोरंजकता एवं प्रभावशीलता, गतिशील

संवाद, मंचीयताके लिए असंभव दृश्य पर उपाय, शिशु,

बाल एवं वृद्ध अभिनेताओं की कमी के लिए, मंचीय

पात्रों की सीमित संख्या और आर्थिक सुलभता ,

मानवेतर पात्र ।

निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय	अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर नआने वाले पात्र । 'जय-पराजय', 'स्वर्ग की झलक', 'छठा बेटा', 'कैद', 'उड़ान', 'पैंतरे', 'अलग अलग रास्ते', 'अंजोदीदी', 'अंधी गली', 'भँवर', 'बड़े खिलाड़ी'। निष्कर्ष।	32–126
चतुर्थ अध्याय	**अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्र : विविधता एवं विशेषताएँ**	127–146
	पौराणिक अनुपस्थित पात्र, ऐतिहासिक अनुपस्थित पात्र, यथार्थवादी अनुपस्थित पात्र, आदर्शवादी अनुपस्थित पात्र, व्यक्तिवादी अनुपस्थित पात्र, राजनितीक अनुपस्थित पात्र, महत्त्वाकांक्षी अनुपस्थित पात्र, सज्जन एवं दुष्ट अनुपस्थित पात्र, दुहरे चरित्रवाले अनुपस्थित पात्र, अधम प्रवृत्ति के अनुपस्थित पात्र, व्यवसायी अनुपस्थित पात्र, स्त्री एवं पुरूष के रूपों की दृष्टि से, मानवेतर अनुपस्थित पात्र, प्रतीकात्मक अनुपस्थित पात्र, मनोवैज्ञानिक अनुपस्थित पात्र ।	
पंचम अध्याय	**उ प सं हा र**	147–151
	सं द र्भ ग्रं थ सू ची	152–155

प्राक्कथन

विषय प्रवेश - व्याप्ति एवं मर्यादा।

प्राक्कथन

उपेंद्रनाथ अश्क यथार्थवादी परंपरा के सफल नाटककार हैं । अतीतकालीन आदर्शवादी धरातल से उठ कर उन्होंने अपने साहित्य को वर्तमानकालीन यथार्थता प्रदान की है । उनके साहित्य में मध्यवर्ग जीवन की यथार्थ झाँकी नजर आती है । साहित्य की सभी विधाओं पर लेखनी चलाकर नाटक लिखने तथा उसके खेले जाने में उन्होंने अधिक रूचि दिखाई है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हपुर ,एम.फिल (हिंदी विभाग) का छात्र होने के नाते प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध " भारतीय स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती वर्ष 1997" के अवसर पर सविनय प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है । पूर्व निश्चय के अनुसार लघु शोध के लिए मैंने उपेंद्रनाथ अश्क को इसलिए चुना कि बी.ए. में पढ़ते समय उनके नाटक "भँवर " की नायिका प्रतिभा के चरित्रांकन से मैं बहुत प्रभावित हुआ था । लेकिन अश्क जी का साहित्य अतुल भंडार है । उनमें से कोई विषय चुनना मेरे लिए इसलिए कठिन काम हो गया था कि अनेक विषय मुझे प्रभावित कर रहे थे ।इस द्वंद्व से मैं जल्द ही मुक्त हो गया । "बड़े खिलाड़ी" नाटक की भूमिका " बड़ें खिलाड़ी : इतिहास के अंदर इतिहास " पढ़ते समय मैं अश्क जी की पसंद की तकनीक से परिचित हुआ यह तकनीक है -" रंगमंचपर न आने वाले पात्रों का चरित्र-चित्रण "। इससे प्रभावित हो कर मैंने मेरे अनुसंधान का विषय निश्चित किया -

"अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर नआनेवाले पात्र " ।

इस लघु शोध-प्रबंध में अमूर्त पात्रों का स्वरूप,महत्त्व एवं आवश्यकता,अश्क जी के नाटकों के अमूर्त पात्रों का शोध और उनके चरित्रांकन में विविधता का शोध लेना मेरा उद्देश्य है ।

सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है । प्रथम अध्याय है " उपेंद्रनाथ अश्क : एक दृष्टिक्षेप " । उपेंद्रनाथ अश्क एक बहुआयामी व्यक्तित्व वाले साहित्यकार हैं ।पूरे भारत-वर्ष की यात्रा कर के विभिन्न स्थानों पर विविध कार्य करते हुए उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी निर्बाध गति से चलायी है ।

द्वितीय अध्याय में रंगमंचपर न आने वाले पात्रों का महत्व एवं आवश्यकता का विवेचन किया है । अर्थोपक्षेपक द्वारा ही पुराने नाटकों में कथावस्तु की सूचना , निषिद्ध घटना या दृश्य

का कथन किया जाता था । अमंचीय पात्र उतने ही महत्त्वपूर्ण होते हैं जितने कि मंचीय पात्र । आर्थिक सुलभता ,कथावस्तु और नायक का विकास, प्राणि और बाल–वृद्ध अभिनेताओं की कमी, गतिशील संवाद, व्यावसायिक नाटक कंपनी की सुलभता आदि बातों के लिए नाटक में उचित स्थानपर अमंचीय पात्रों की योजना आवश्यक होती है ।यह बात अश्क जी के नाटकों में चित्रित अमूर्त पात्रों के उदाहरण और विविध साहित्यकारों के विचार से स्पष्ट की है ।

तृतीय अध्याय में अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों का शोध लिया गया है । साथ ही इन अमूर्त पात्रों संबंधी अन्य साहित्यकारों के विचार और संबंधित नाटक के उद्देश्य और समस्याओं को उजागर करनेमें ये अमूर्त पात्र किस प्रकार मदद करते है ? यह भी सामान्य रूप से स्पष्ट किया है । भ्रष्टाचार ,फूस,शोषण,विवाह, प्रेम,रिश्वतखोरी, फरेब, एक दूसरे को काटने की प्रवृत्ति,दहेज,शासन–असमर्थता आदि समस्याओं का चित्रण अश्क जी के अमूर्त पात्रों द्वारा हुआ है ।

चतुर्थ अध्याय में अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों के चरित्र–चित्रण की विविधता एवं विशेषताओं का विवेचन है । अश्क जी ने अपने नाटकों के लिए अपने ही मध्यवर्ग जीवन से विविध व्यक्तित्वों को उठाया है । उनके पात्रों में विविध व्यवसाय से संबंधित नमूने मिलते हैं । स्त्री–पुरूष के संबंधों पर आधारित विविध रूप भी अश्क जी के अमूर्त पात्रों में मिलते हैं । मानवेतर प्राणि,मनोवैज्ञानिक ,आदर्शवादी, यथार्थवादी, दुहरे चरित्र वाले ,प्रतीकात्मक आदि की वैविध्य–बहुलता उनके अमूर्त पात्रों में भी मिलती है ।

पंचम अध्याय में उपसंहार है जो कि इस प्रबंध का सार है । अंत में परिशिष्ट दिया गया है । पूर्वार्घ में आधार ग्रंथ और उत्तरार्ध में संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है । साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशनवर्ष एवं संस्करण भी दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु–शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायता करने वाले तथा प्रोत्साहित करने वाले हित–चिंतको के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है ।

प्रस्तुत लघु–शोध प्रबंध श्रद्धेय डॉ.(सौ.) पुष्पा जी वास्कर के सूक्ष्म निरीक्षण और मार्गदर्शन का फल है । आपके पथ प्रदर्शन, निर्देशन और प्रोत्साहन से ही यह शोध कार्य पूरा हो सका । मेरा और मेरी समस्याओं का स्वागत आपने प्रसन्न एवं हास्य मुद्रा से किया है । जब भी मैं लघु–शोध विषय की व्याप्ति के बाहर जाता,तो मेरी गाडी सही पटरी पर लाने में आदरणीय डॉ.

आनंद वास्कर जी ने मेरी सहयता की है ।आप दोनों का मैं आजीवन ऋणी रहूँगा और इस आशा में कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मुझे मिलता रहेगा ।

विविध साहित्यकारों का अध्ययन भी मुझे लाभप्रद हुआ । उन सभी कृतिकारों के प्रति आभार प्रकट करना मेरा दायित्व है ।

आदरणीय हिंदी विभाग–अध्यक्ष डॉ. पी.एस. पाटील जी का मैं अत्यंत आभारी हूँ । आपने मेरे अंदर की शिक्षा के प्रति की इच्छा और रूचि को परखा और उच्च शिक्षा के लिए मेरा मार्ग प्रशस्त किया । साथ ही डॉ. अर्जुन चव्हाण जी,डॉ. वसंत मोरे , डॉ. सुधाकर गोकाककर, डॉ. के. आर. पाटील, प्रा. भागवत जी के प्रति भी सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

मराठी विद्यालय आसगाँव ,ता.चंदगड के सभी छात्र और मेरे अध्यापक दोस्त श्री. एन.ए.मुत्नाळे , श्री. कृष्णा खाडे, श्री. विश्वास येजरे ,श्री. गुणाजी राणे और पंचायत समिति के नामदेव माळी साहब, श्री. पी.आर. पाटील साबह एवं के.बी.पाटील साहब और कलर्क जे.एम.शिंदे तथा मेरे सहपाठियों का भी आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ इस कार्य के साथ थी ।

मेरे परिवार के सभी जनों का आशीर्वाद एवं शुभ–कामनाएँ मेरे साथ थी । उनसभीको मैं अपनी श्रद्धा और आभार प्रकट करता हूँ । मेरी माँ सौभाग्यशालिनी हौशाबाई मोरे को मैं अपनी श्रद्धा प्रकट करता हूँ , जो सदैव मुझे और गली के बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रेरित करती रही हैं । आज तक मैंने जो उच्च शिक्षा प्राप्त की है और भविष्य में कुछ आगे पढूँगा यह सब उसी के कष्ट तथा प्रेरणा का ही फल होगा ।

शोध कार्य पूरा करनेके लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापुर तथा शिवराज कॉलेज ,गडहिंग्लज के पुस्तकालयों से ग्रंथ प्राप्त किये हैं । अतः उनके ग्रंथपाल और शिवराज कॉलेज के प्राचार्य डॉ. डी.व्ही. तोगले जी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

अंत में इस शोध प्रबंध को यथा–शीघ्र सुचारू रूप से टंकित रूप देने का काम करने वाले श्रीयुक्त बाळकृष्ण रा.सावंत ,कोल्हापुर के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

इसी के साथ ही मैं अपना यह लघु–शोध–प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ आप के अवलोकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

कोल्हापुर

दिसंबर 31,1997 ।

श्री.पी.एस. मोरे,

शोध–छात्र